परमपिता शिव परमात्मा

बच्चों के बाबा

[प्रजापिता ब्रह्मा]

बच्चों के बाबा (प्रजापिता ब्रह्मा)

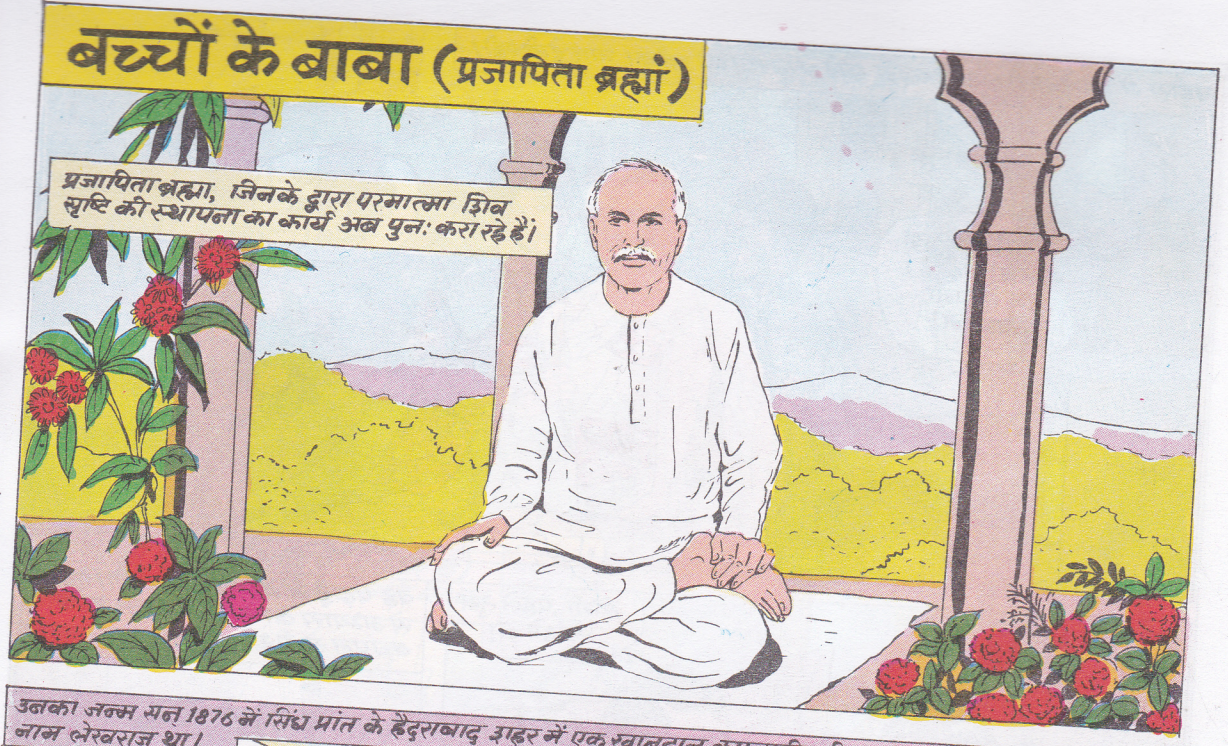

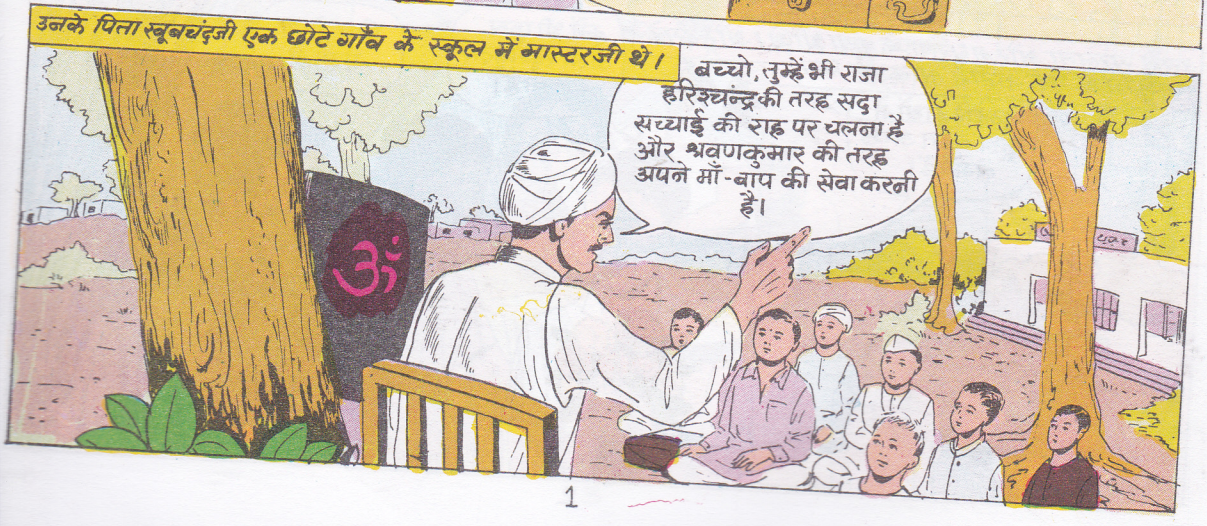

पड़ोस में रहनेवाली लक्ष्मी बहन छोटे लेखराज को माँ का प्यार देती रही।

मौसी! अब मुझे खेलना नहीं है। एक कहानी सुनाओ न!

हाँ हाँ ज़रूर... पहले थोड़ा खाले।

तुम्हें लड्डू अच्छे लगते हैं न!

मौसी, पहले तुम खाओ न!

वह पढ़ाई में बड़ा होशियार था। एकाग्रचित से अभ्यास करने की विशेषता उसमें बचपन से ही थी।

उसमें सरलता और मधुरता के गुण भी थे। और उसके व्यक्तित्व में एक अजीब आकर्षण था।

तुम्हारे हाथों में फूल बहुत अच्छे लगते हैं।

हमें भी फूल जैसा खुशबूदार बनना है।

मित्र हो तो ऐसा हो...

वह बड़ों के साथ सदा

प्रणाम याचीजी। मेरे लिए कोई सेवा...?

बचपन से ही उसमें
वह हर रोज विष्णु की
प्रार्थना करता था।

एक बार उनके पिताजी

वह बड़ों के साथ सदा नम्र और आज्ञाकारी था।
प्रणाम याचीजी। मेरे लिए कोई सेवा...?
कैसे हो बेटा?
बेटा हो तो ऐसा हो।
बच्चा तो जैसे कुल दीपक है।

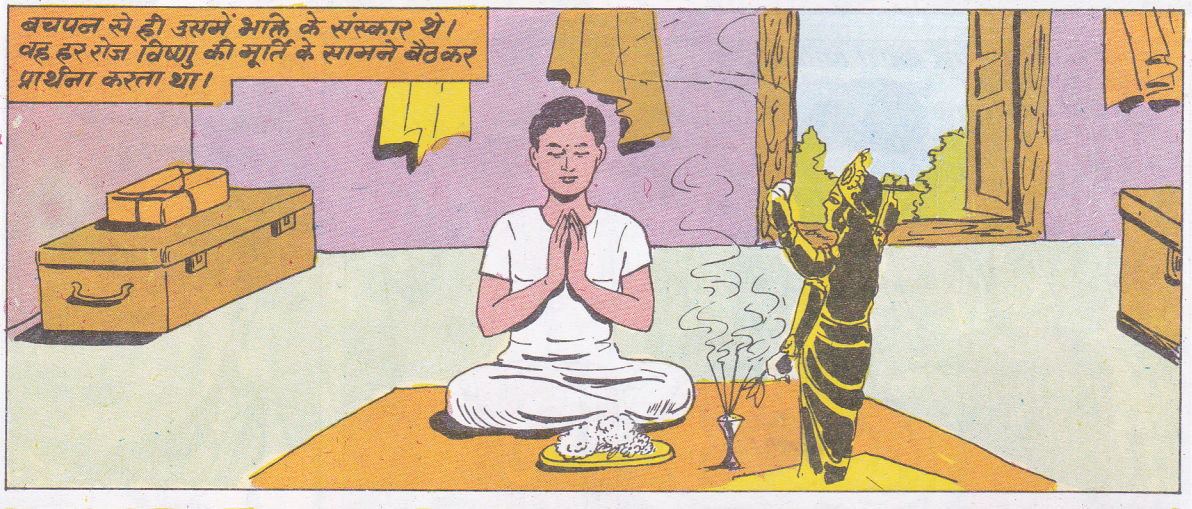
बचपन से ही उसमें भले के संस्कार थे। वह हर रोज विष्णु की मूर्ति के सामने बैठकर प्रार्थना करता था।

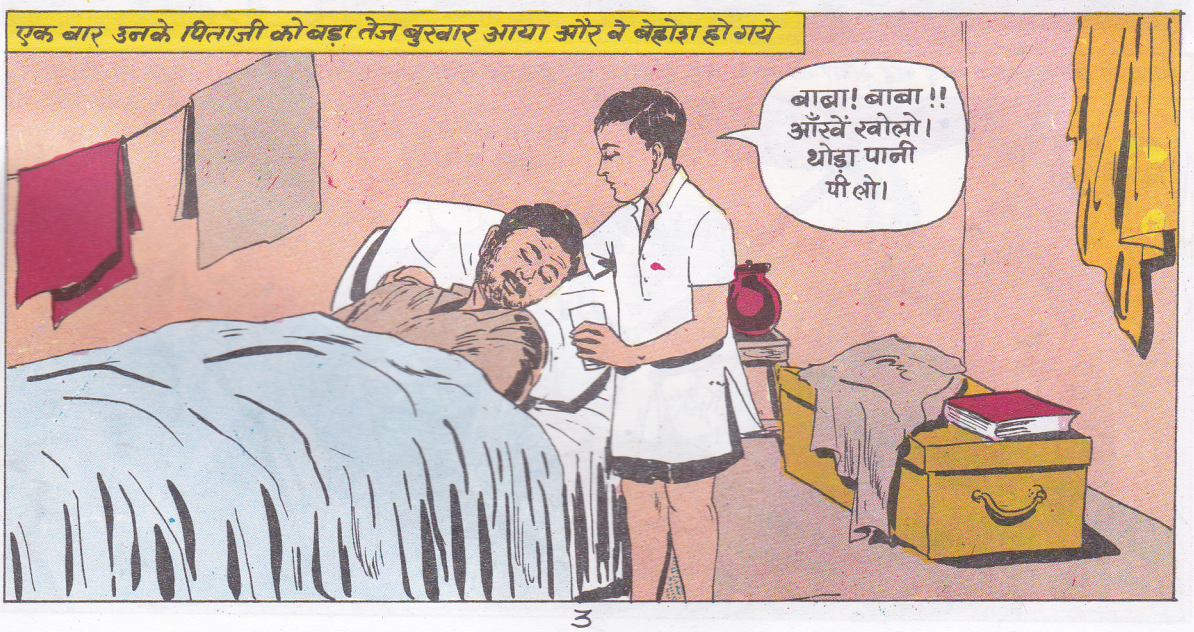
एक बार उनके पिताजी को बड़ा तेज बुखार आया और वे बेहोश हो गये
बाबा! बाबा!! आँखें खोलो। थोड़ा पानी पी लो।

RED

गाँव में कोई वैद्य नहीं था। छोटा बालक उन्हें शहर ले जाने बैलगाड़ी ले आया।

बालक लेखराज अपने बेहोश पिताजी का सिर गोद में ले कर बैलगाड़ी में बैठ गया। और शहर की ओर गाड़ी चल पड़ी।

बाबा! फिकर न करो। भगवान जल्दी ही अच्छा कर देंगे।

ऊहं... ऊहं...।

मेरे बाबा को हैदराबाद के किसी अच्छे डॉक्टर के पास लेजाऊँ....तो जल्दी अच्छे हो जायेंगे।

पिताजी की मृत्यु के बाद बड़े भैया के साथ वह अनाज की दुकान संभालने लगा।

बाबू, आप कितने भले हो!

कितने गरीब लोग हैं। थोड़ा अधिक दे दूँ।

एक तो उधार और ऊपर से तौल में ज्यादा! देख लेता हूँ...।

बड़े भैया को यह रहमदिली पसंद नहीं आयी... जवाहरात के धंधे के लिए वे पहले बंबई गये। उन्होंने धंधे में बहुत अच्छी कमाई की। और नामीग्रामी व्यापारी बन गये। और वे कलकत्ता भी गये।

ऐसे तो तू मेरी सारी दुकान लुटा देगा। धंधा करना आता है क्या?

अब तो बहुत हो गया। मुझे किसी और धंधे की तलाश करनी होगी।

और उन्होंने जवाहरात का धंधा सीख लिया।

उनका ब्याह जसोदा नामक एक गुणवती संस्कारी कन्या के साथ हुआ। उसमें ईश्वर भक्ति तथा पति परायणता अपूर्व थी।

अब मेरी जिम्मेदारी पूरी हुई।

बेटी, भगवान तुम दोनों को सुखी बनायें।

बाबा का सुखी और सम्पन्न परिवार - जहाँ स्नेह और मधुरता का परस्पर व्यवहार था। बाबा "आओ बच्चे" कहते और बच्चे बाबा को चिपट पड़ते थे।

वे बच्चों की परवरिश ऐसी करते मानों वे राजकुमार राजकुमारियाँ हों...

सारा परिवार उनसे संतुष्ट था। वे हरएक के लिए कुछ न कुछ सौगात लाते रहते---और बात ही बात में मधुरता से सीख देते रहते।

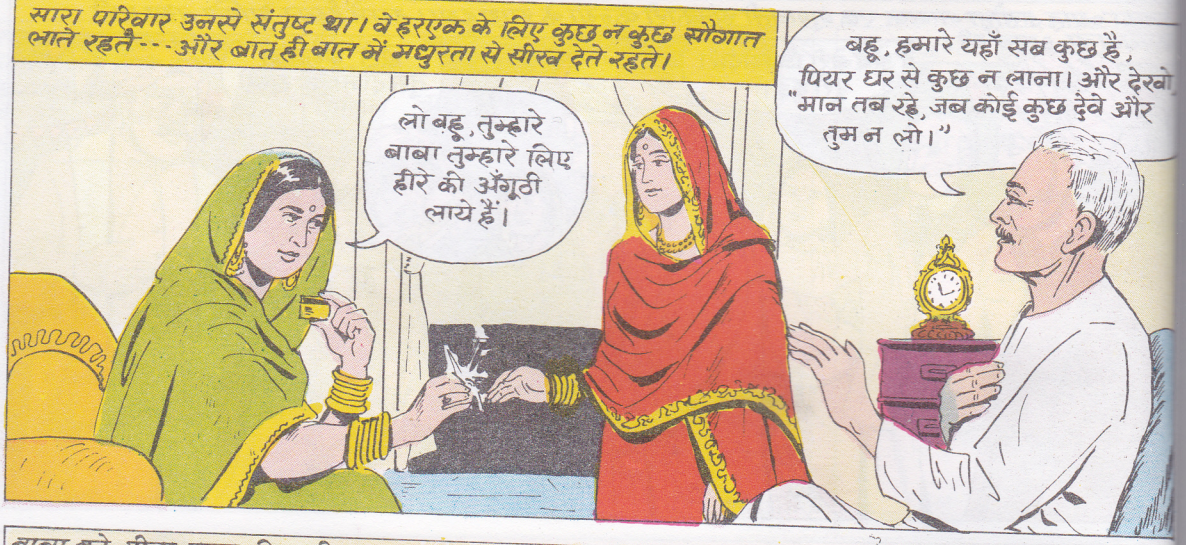

बाबा को गीता बहुत प्रिय थी। उसका वे नियमित पाठ करते थे। वे यात्रा में भी गीता-पाठ अवश्य करते।

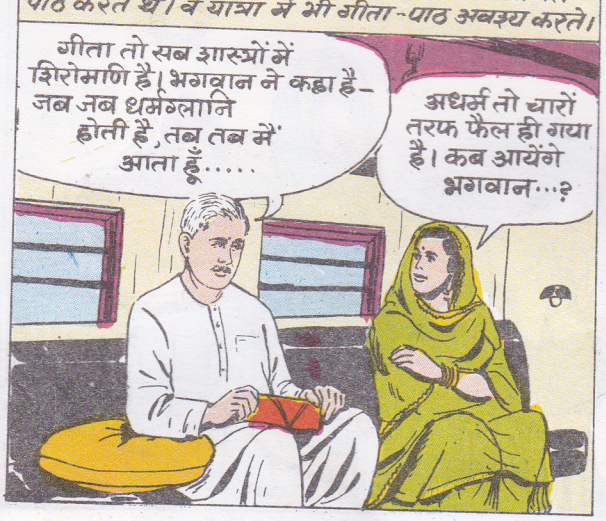

उनको श्री नारायण का चित्र बहुत पसंद था। एक चित्रकार शेष शैया पर श्री लक्ष्मी नारायण का चित्र बना कर लाता है।

पर श्री नारायण के पाँव दबाती हुई श्री लक्ष्मी का चित्र निकाल कर तुम दूसरा चित्र बनाना.... जिसमें श्री लक्ष्मी जी का गौरव बना रहे।

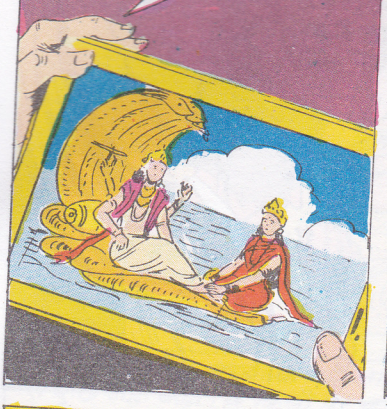

कलकत्ता में उनका ज़वाहरात का बड़ा व्यापार था। बड़े-बड़े राजा और रईस ग्राहक रूप में उनके यहाँ आते रहते थे।

बड़े-बड़े राजघरानों से उनका घनिष्ठ संबंध था। अंतःपुर में भी वे बिना रोक-टोक ससम्मान जेवर दिखाने चले जाते थे।

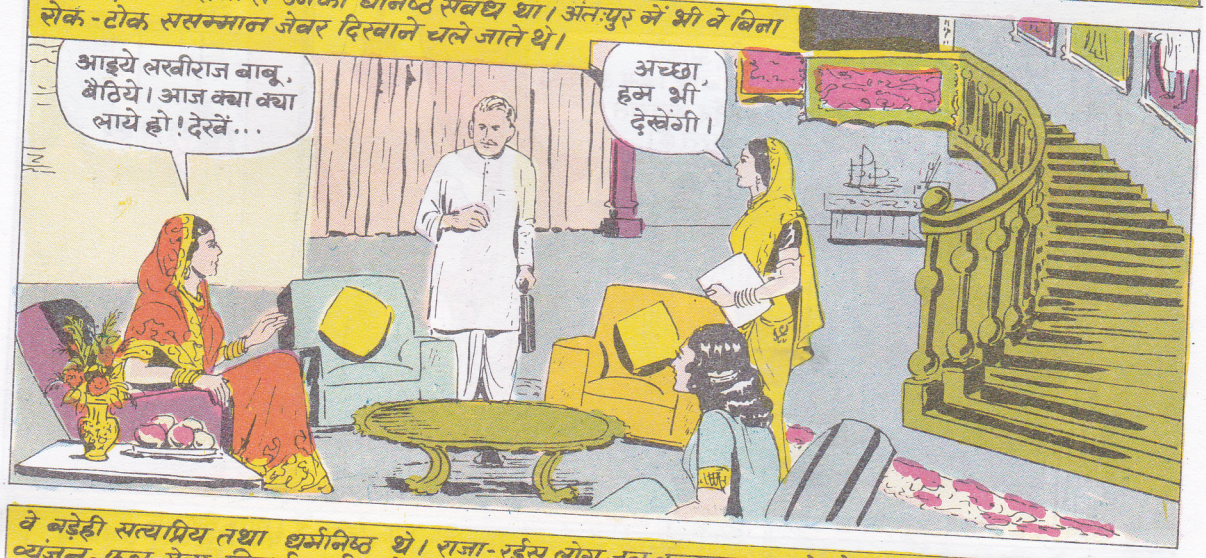

वे बड़ेही सत्यप्रिय तथा धर्मनिष्ठ थे। राजा-रईस लोग जब कलकत्ता आते तो पार्टी में शुद्ध शाकाहारी व्यंजन-फल, मेवा, मिठाई आदि परोसा जाता था।

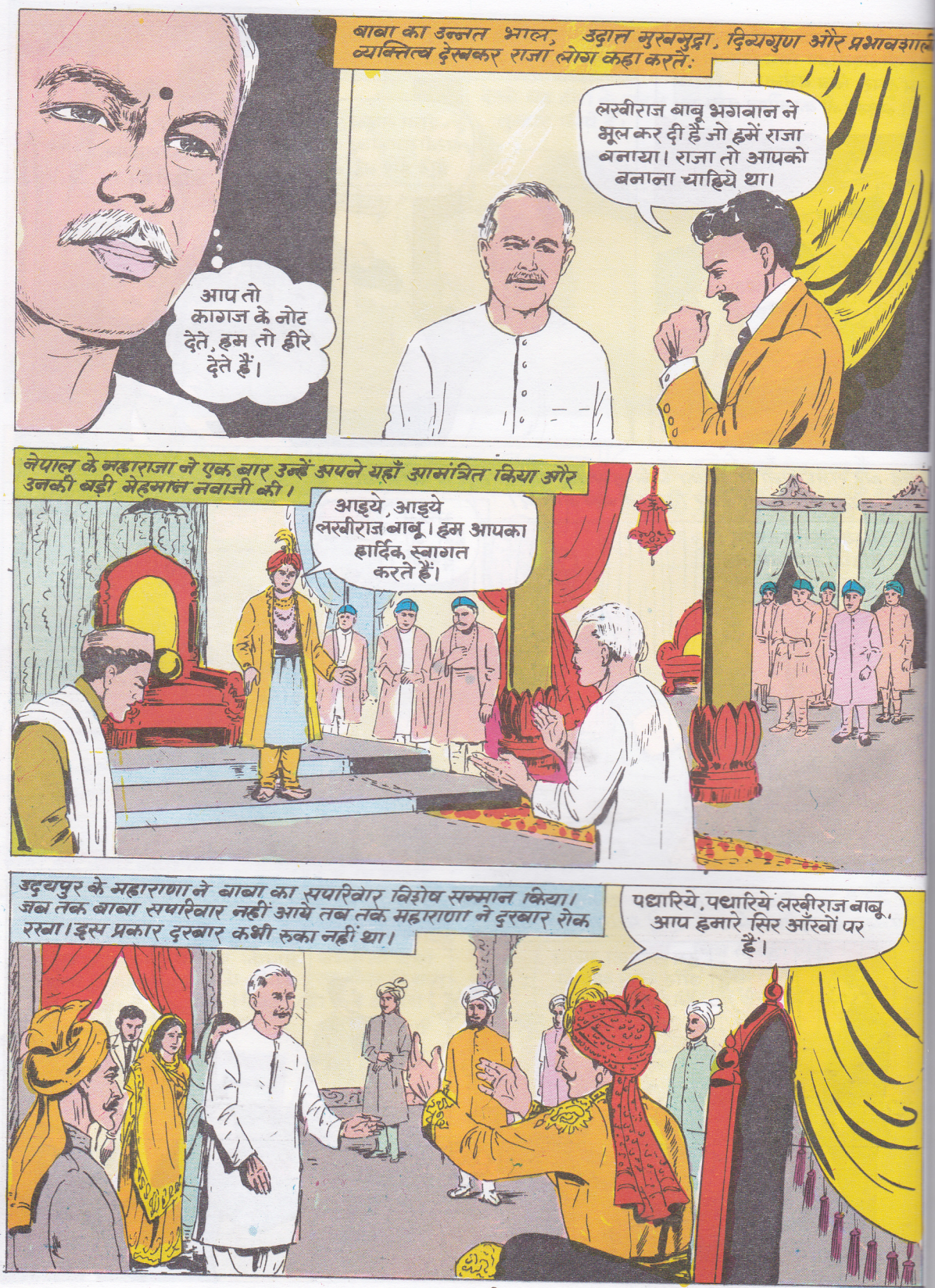
बाबा का उन्नत भाल, उद्दात मुखमुद्रा, दिव्यगुण और प्रभावशाली व्यक्तित्व देखकर राजा लोग कहा करते:
आप तो कागज के नोट देते, हम तो हीरे देते हैं।
लखीराज बाबू भगवान ने भूल कर दी है जो हमें राजा बनाया। राजा तो आपको बनाना चाहिये था।
नेपाल के महाराजा ने एक बार उन्हें अपने यहाँ आमंत्रित किया और उनकी बड़ी मेहमान नवाजी की।
आइये, आइये लखीराज बाबू। हम आपका हार्दिक स्वागत करते हैं।
उदयपुर के महाराणा ने बाबा का सपरिवार विशेष सम्मान किया। जब तक बाबा सपरिवार नहीं आये तब तक महाराणा ने दरबार रोक रखा। इस प्रकार दरबार कभी रुका नहीं था।
पधारिये, पधारिये लखीराज बाबू, आप हमारे सिर आँखों पर हैं।

नरवीराज बाबू लाखों में एक हैं, आप हमारे शाही मेहमान हैं। हाँ, अब दरबार शुरू हो।

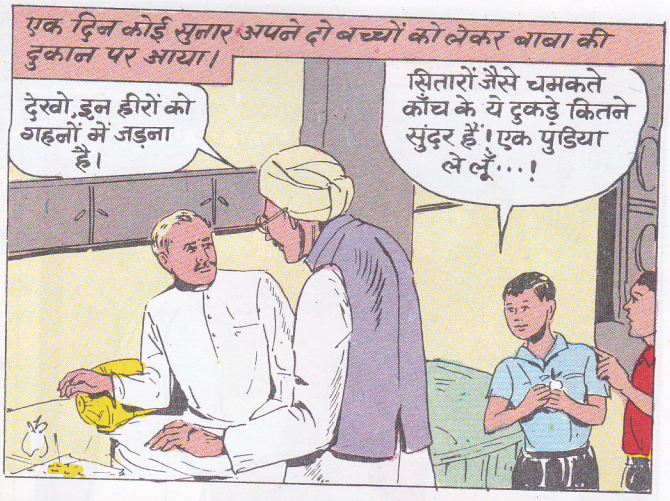
एक दिन कोई सुनार अपने दो बच्चों को लेकर बाबा की दुकान पर आया।
देखो, इन हीरों को गहनों में जड़ना है।
सितारों जैसे चमकते काँच के ये टुकड़े कितने सुंदर हैं। एक पुड़िया ले लूँ...!

सुनार और उसके बच्चों के चले जाने के बाद बाबा ने देखा कि हीरों की एक पुड़िया गायब है। उन्होंने किसी से कुछ नहीं कहा। वे किसी पर कभी अविश्वास नहीं करते थे।
शायद सुनार के बच्चों ने खेलने के लिए ले ली हो....
और वे सुनार के घर चले गये।

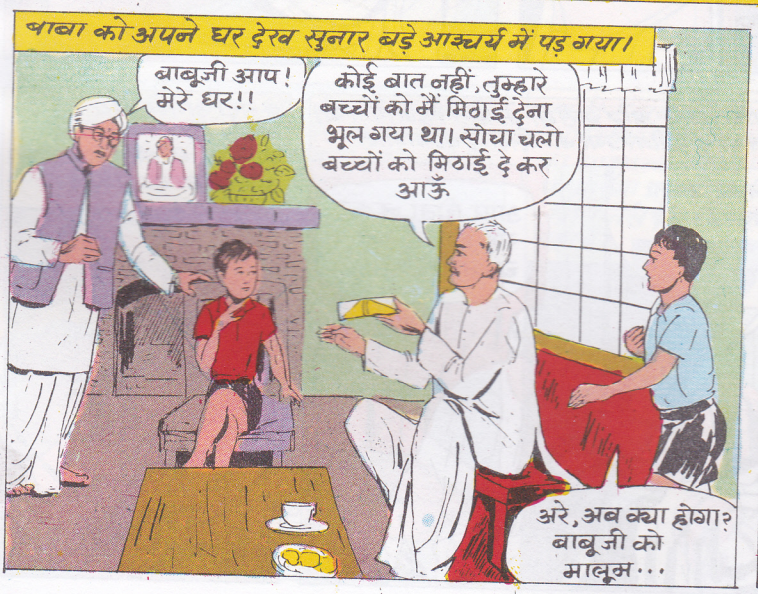
बाबा को अपने घर देख सुनार बड़े आश्चर्य में पड़ गया।
बाबूजी आप! मेरे घर!!
कोई बात नहीं, तुम्हारे बच्चों को मैं मिठाई देना भूल गया था। सोचा चलो बच्चों को मिठाई दे कर आऊँ
अरे, अब क्या होगा? बाबूजी को मालूम...

मीठे बच्चे, तुमने खेलने के लिए दुकान से पुड़िया ली थी न! वह कहाँ है?
मैंने नहीं, बड़े भैया ने ली थी। छत के नीचे रखी है। ले आऊँ?

बाबा मेहमानों का स्वागत ऐसे करते जैसे घरमें देवता पधारे हों। अतिथि सत्कार को वे धर्म समझते थे।

आइये, आइये, आपने हमारा घर पावन किया।

उनमें गुरु भक्ति अपार थी। अपने पौत्र के जन्म-दिन पर हैदराबाद में एक दावत का आयोजन किया था। उसी दिन गुरु का तार आया —

कुछ भी हो! बम्बई जाना ही होगा। "गुरु का बुलावा काल का बुलावा"

आज न जाओ तो? आपके बिना पार्टी का क्या होगा?

बाबा एक बार गंगा किनारे धार्मिक यात्रा हेतु सपरिवार गये। अपनी पुत्र वधु द्वारा ब्राह्मण को बड़ी दक्षिणा दिलाई।

एक हजार रुपये! दादा आप तो राजा हो।

बाबा का एक दोस्त बनारस में रहता था। जब अपने परिवार से तंग आ जाता तो बाबा से मिलने चला आता....

कितना शांत चेहरा! कितनी प्रेम भरी मूर्ति!! कितनी अपूर्व शांति मिल रही है!!!

उनके चाचा मूलचंद भी बहुत भक्तिभाव वाले और गरीबों के प्रति रहमदिल थे। उनके सदाव्रत से गरीबों को अन्नवस्त्र तथा दुःखी स्त्रियों को सिलाई की मशीनें मिलती थी।

अब मेरे जाने का वक्त नजदीक आ गया है। मेरे पीछे सदाव्रत का क्या होगा?

आप चिंता न करें, यह भंडारा सदा चलता रहेगा।

वे सदा अपने लिये नहीं, जगत की आत्माओं के कल्याण के लिए भगवान से प्रार्थना करते रहते।

गंगा किनारे उगते सूर्य को पानी की अंजली के पीछे भी सर्व आत्माओं के लिए कल्याण की भावना थी।

समग्र विश्व की आत्माओं के प्रति।

अपनी भक्ति के फल स्वरूप बम्बई के अपने बंगले में एक बार उन्हें विष्णु चतुर्भुज का दिव्य साक्षात्कार हुआ।

यह गुरु का ही प्रताप लगता है। ओहो, प्रभु··· मैं धन्य हूँ।

गुरुजी के पास—

गुरुजी! क्या यह आपकी ही कृपा थी?

बाबा मन ही मन समझ गये। गुरु इस संबंधमें कुछ नहीं जानते। फिर बाबा का मन सच्चे सतगुरु परमात्मा की ओर खिंचने लगा।

इसके बाद बाबा अपने मित्र के घर वाराणसी चले गये। वे एकान्त में जाकर प्रभुचिंतन में खो जाते। उन्हें दिव्य साक्षात्कार होने लगे। उन्होंने घर वालों को पत्र लिखा—

मिल गया, मिल गया खजाना मिल गया!!! माल: रत्न ही रत्न मिल गये! चाबी मिल गई!!

एक दिन बाबा को निराकार ज्योतिस्वरूप परमात्मा शिव का साक्षात्कार हुआ। परमात्मा प्रकाश का दिव्य स्रोत जैसे उनके ऊपर उतर रहा है।

पाना था सो पा लिया अब बाकी क्या रहा।

विश्व के मानव इतिहास की एक आश्चर्यकारक घटना। कलियुगी सृष्टि के महा विनाश का साक्षात्कार।

पाश्चिमी दुनिया बॉम्ब से दहक रही है।

भारत में गृहयुद्ध, भूकम्प, बाढ़ से हाहाकार... बचाओ! बचाओ!

बस करो, प्रभु बस करो भयंकर दृश्य समाप्त करें।

फिर बाबा कलकत्ता आ गये। हीरे अब उन्हें पत्थर ही पत्थर दिखाई पड़ने लगे। बाबा अपने भागीदार के साथ—

सेवकराम, मुझे छुट्टी करो। मेरा दिल अब व्यापार में नहीं रहा। हिसाब कर लो।

लखीराज, यह क्या कह रहे हो? यह सब कौन संभालेगा? मुझे तो कुछ आता नहीं।

भागीदार ने जो फैसला किया बाबा ने वही ठीक मान लिया घर तार भेजा—

अल्लिफ[+] को अल्लाह मिला बे[*] को मिली झूठी बादशाही आई तार अल्लिफ को हुआ रेल का राही।

बाबा ने एक और अनोखा साक्षात्कार किया, फलतः वे अपने परिवार से धीरे धीरे नष्टोमोह हो गये।

अरे, मेरे परिवार का क्या होगा?

विमान में बैठ ऊँचे...ऊँचे उड़ रहा हूँ... कितना अलौकिक आनंद...

अरे! इस संकल्प ने तो मुझे नीचे ला दिया वह दिव्य आनंद जैसे खो गया...।

अल्लिफ : आत्मा, बे : भागीदार

उन्हीं दिनों बाबा को श्री कृष्ण और उनके स्वरूपों के साक्षात्कार हुए। सभी का वरदान था — तत्त्वम् 'तुम वही देवता हो।

इस वरदान का क्या अर्थ होगा? क्या मैं वही हूँ?

अहम् विष्णु चतुर्भुज तत्त्वम्

तत्त्वम्

तत्त्वम् तत्त्वम् तत्त्वम्

एक बार बाबा को मृत्युदशा का साक्षात्कार हुआ। सितारे समान आत्मा भृकुटि से निकल कर पाँव के अंगूठे की तरफ गई और फिर लौटकर मस्तक से निकल आकाश की ओर जाती हुई देखी।

सचमुच, आत्मा शरीर से अलग है... मैं देह नहीं देह में रहनेवाली चेतन आत्मा हूँ।

बाबा हैदराबाद लौट आये। वे रात को देर तक सिन्धु नदी के किनारे, दूर दूर एकांत में बैठकर तारों भरे आकाश में खो जाते।

रात बारह बजे तक राह देखने के बाद नौकर ढूँढने निकलते है।

बाबा बहुत रात हो गयी। अब घर चलिये।

उन्हीं दिनों उनके गुरु लालजी महाराज उनके यहाँ पधारे हुए थे। घर में ही सतसंग चल रहा था। बीच से बाबा उठ खड़े हुए और अपने कमरे की ओर जाने लगे—

बाबा को क्या हुआ होगा! ऐसे तो सतसंग के बीच से वे कभी नहीं उठते।

एक अद्भुत आश्चर्यजनक और अपूर्व साक्षात्कार :
बाबा जैसे एकदम अशरीरी भाव का अनुभव करने लगे। उनकी आँखें लाल दिये जैसी चमकती थी। सारा कमरा लाल दिव्य प्रकाशमय—

अहो, बाबा का कितना दिव्य रूप!

परमपिता परमात्मा शिव का दिव्य अवतरण और उनके द्वारा उच्चारित प्रथम महावाक्य :

शिवानन्द स्वरूप हूँ, शिवानन्द स्वरूप हूँ, शिवानन्द स्वरूप हूँ।
ज्ञानस्वरूप हूँ, ज्ञानस्वरूप हूँ, ज्ञानस्वरूप हूँ।
प्रकाश स्वरूप हूँ, प्रकाश स्वरूप हूँ, प्रकाश स्वरूप हूँ।

बाबा बाद में सोच रहे थे कि
दिव्य अनुभव किसने कराया

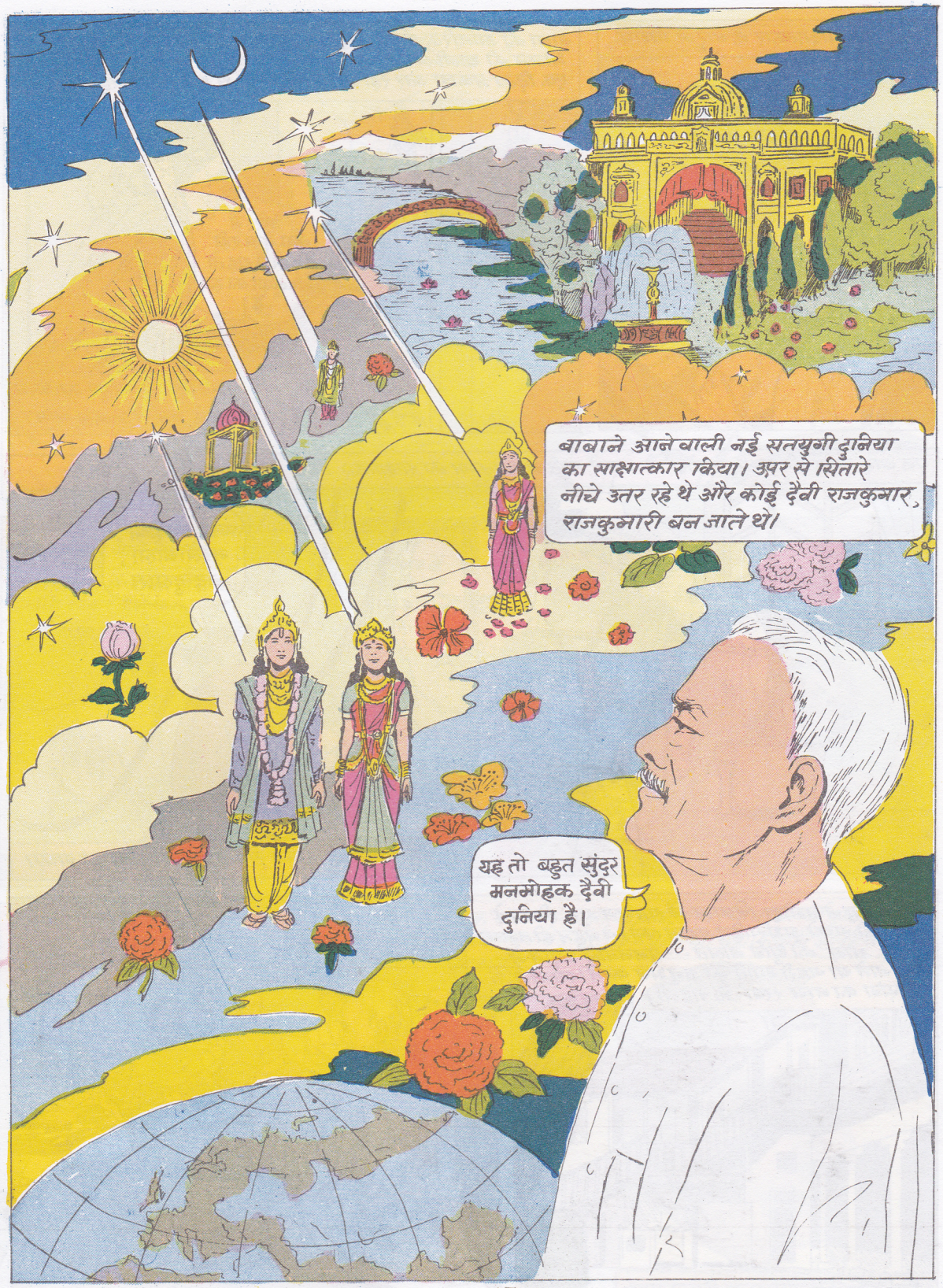
बाबाने आनेवाली नई सतयुगी दुनिया का साक्षात्कार किया। ऊपर से सितारे नीचे उतर रहे थे और कोई दैवी राजकुमार, राजकुमारी बन जाते थे।
यह तो बहुत सुंदर मनमोहक दैवी दुनिया है।

बाबा इस साक्षात्कार के बारे में विशेष मंथन करने लगे।

उस शक्ति ने कहा था... तुम्हें ऐसी नयी दुनिया बनानी है।

बाबा की आंतरिक स्थिति बदलने लगी थी। एक बार उनकी पुत्रवधू भोजन की थाली लेकर उनके कमरे में आयी...। बाबा के चारों तरफ एक दिव्य प्रकाश उतर रहा था। उसके हाथों से थाली गिर गई...

अरे! मैं क्या देख रही हूँ? अहो यह तो श्री कृष्ण का रूप है।

इसी दिन से श्वसुर का भाव उनके मन से निकल गया।

एक बार बाबा की पत्नी जसोदा ने अपने पति में श्रीकृष्ण का साक्षात्कार किया और भाव विभोर हो गयी।

ओ कन्हैया, मुरलीवाला, नंद दुलारा...

पत्नी जसोदा के मन से भी पति का भाव हट गया।

अब बाबा ने जसोदा निवास में सतसंग शुरू किया। वे गीता को सच्चे अर्थसहित पढ़ाने लगे। वे बहुत ही तन्मय होकर 'ओम्' की ध्वनि बोलते... सुननेवाले ध्यान में चले जाते या गहरी शांति का अनुभव करते। लोगोंने सतसंग का नाम रखा ॐ मंडली।

'ॐ मंडली' में आनेवाली कन्याओं और माताओं को दिव्य साक्षात्कार होने लगे। शहर भर में हवा फैल गयी···"बाबा साक्षात्कार कराते हैं।"

प्रभुमिलन की प्यासी आत्माएँ आनंद मधुर स्वर से गाने लगती—

ओम मंडली में जाकर मैंने क्या देखा सखीरी जाकर मैंने क्या पाया।

ज्ञाननगर में बनाऊँगी घर तज के पाँच विकार।

मोहे ज्ञान के झूले में झुलाये कोई···

उन दिनों बाबा के स्नेह सौजन्य से आकर्षित गोपी नामक माता सत्संग में आने लगी। बाबा में श्री कृष्ण की भासना आती। आगे चलकर यही इस यज्ञ सेवा की निमित्त बनती हैं और आज प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की संयुक्त मुख्य प्रशासिका हैं।

ब्रह्माकुमारी मनमोहिनी (बड़ी दीदी)

'रामा' नाम की एक कन्या ने स्वप्न में देखा, मखमली हरियाली वाला, विशाल मैदान है बाल कन्हैया (मिचनु) हंसता हुआ, इशारे से बुला रहा है---फिर उसके पीछे

आओ, मेरे साथ खेलो!

एक बार जब वह सतसंग में गयी—

अरे यह दिव्य श्वेत वस्त्र-धारी पुरुष कौन! सपने में यही तो थे।

वह कन्या उसी दिन से इस ईश्वरीय सेवा में समर्पित हो गयी। आज आप इस संस्था की मुख्य प्रशासिका के रूप में देश-विदेश के 1000 से अधिक सेवा केंद्रों का संचालन कर रही है।

ब्रह्माकुमारी राजयोगिनी प्रकाशमणि

राधे ने भी अपना जीवन ईश्वरीय कार्य में समर्पित कर दिया। आगे चल कर यही ॐ राधे श्री सरस्वती (जगदम्बा) कहलाई। यज्ञ की सभी आत्माओं की मातृवत पालना और उन्नति की निमित्त बनी।

इन्हीं दिनों एक सुंदर और गुणवान कन्या 'राधा' ॐ मंडली में आने लगी। वह गीत संगीत और नृत्य में प्रवीण थी।

तुम कौन हो? तुम शरीर नहीं यह शरीर तो पांच तत्वों का बना, मिट्टी का पुतला है। तुम एक शुद्ध अविनाशी आत्मा--ईश्वर की संतान हो।

कितनी दिव्य और शांतिदायक वाणी!

एक ऊँच घराने की कन्या बाबा के पास आई।

बाबा, मैं बहुत दुःखी हूँ। मेरा पति मर गया है।

बच्ची, किसका पति मरा! तुम तो एक अविनाशी - अमर आत्मा हो। शरीर का पति मर गया। समझा! आत्माओं का पति - परमात्मा कभी मर सकता है क्या? तुम विधवा नही हो।

बाबा अब मेरा दुःख दूर हो गया। मैं बहुत खुश ... इतनी खुशी ...

यह कहते हुए वह ध्यान में चली गयी।

उस कन्याने अपने पिता को बाबा के पास भेजा। वह बहुत क्रोधी और शराबी था। ॐ राधे ने उसे ज्ञान दिया।

आप कौन हैं; यह जानते हो? तुम्हारा यह शरीर मंदिर है, उसमें रहनेवाली आत्मा तुम देवता हो। क्या देवता के प्रसाद में शराब ले जाते हैं?

क्या मैं देवता... फिर शराब कैसे पी सकता हूँ।

घर आते ही वह शराब की बोतलें बाहर फेंकने लगा।

जो मेरे लिए बुरा वह तुम्हारे लिए भी बुरा।

अरे! बड़े भैया, यह क्या कर रहे हो? आप मत पीना, मेरे लिए....

बाद में उस कन्या (हृदय पुष्पा) के माता पिता परिवार साहित ॐ मंडली में तन मन धन साहित समर्पित हो गये।

एक छोटी बच्ची, अपनी माता के साथ ॐ मंडली में आई। बाबा को देखते ही उसने मुरली धर श्रीकृष्ण का साक्षात्कार किया।

बाद में उस कन्या (शांतामणी) के मातापिता परिवार सहित ॐ मंडली में तन मन धन साहित समर्पित हो गये।

बाबा कन्याओं की पितृवत पालना करते थे। साथ साथ उनमें पावेत्रता के संस्कार भी दृढ करते थे।

बच्ची, तुम्हें कलियुगी पण्ट-शर्टवाले से शादी करनी है या पीताम्बरी वाले सतयुगी श्री कृष्ण से!

बाबा हम तो श्री कृष्ण से ही शादी करेंगी।

सिंध हैदराबाद में हवा फैल गयी कि बाबा सभी को साक्षात्कार कराते हैं। अखबार में भी छपा...

" जैसे पाई पैसे में कुल्फी, वैसे दादा के सतसंग में साक्षात्कार "

कन्याएँ भाव विभोर हो कर मानों गोपिकाओं की तरह नृत्य करतीं।

दादा की लाडली पुत्री (निर्मलशांता) एक बार अपने ससुराल से बाबा को मिलने आई। लौटते वक्त—

बाबा, कल गाडी भेजना।

कल जो होगा देखा जायेगा।

अपने बाबा की इस बात पर वह रूठ कर चली आई। आधीरात सपने में प्रकाशमय बाबा और उनके पीछे श्री कृष्ण...

बच्ची, जागो। तुम्हें हर एक आत्मा की ज्योति जगानी है। विश्व का कल्याण करना है...

बाबा आप सचमुच भगवान् हैं। मैं पहचान नहीं सकी। अब आप जो कहेंगे वही करूँगी।

बाबा सपरिवार काश्मीर चले गये...। उनकी बेटी की भेंट एक राहगीर से.....

गुलमर्ग जाने का रास्ता किधर से जाता है?

मुझे गुलमर्ग का रास्ता मालूम नहीं, परमधाम का रास्ता बता सकती हूँ।

वह राहगीर को अपने बाबा के पास ले आई। बाबा को देखते ही राहगीर (रिजूमल) ने लाईट ही लाईट का अनुभव किया।

अहा! मैं धन्य हो गया!

बाद में रिजूमल सपरिवार इस यज्ञ में समर्पित हो गये।

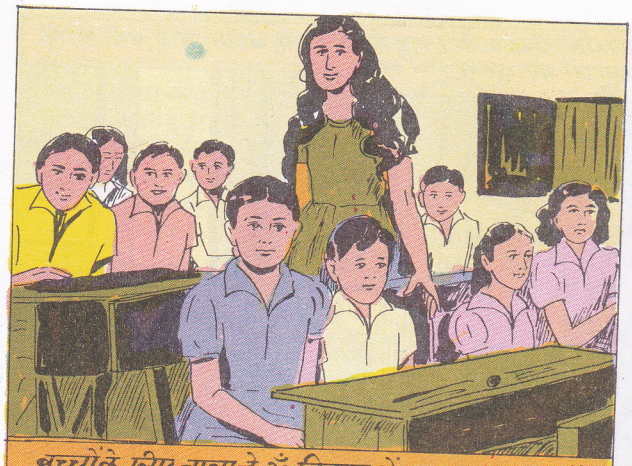

बच्चोंके लिए बाबाने ॐ निवास में एक छात्रावास और स्कूल का प्रबंध किया। अभ्यास के साथ उन्हें आध्यात्मिक ज्ञान, चित्र, संगीत आदि कलाओं की शिक्षा दी जाती थी।

जशोदाजी और रामा, मोतीलाल, लीला आदि ने बच्चों की पालना और पढाई की जिम्मेदारी ली। मुलाकातियों से

बाबा ने सोचा परमपिता शिव माताओं द्वारा ही सबका उद्धार करवाना चाहते हैं। माताओं को एक कमेटी बनाकर अपनी सारी सम्पत्ति उनके नाम समर्पित कर दी।

अब परमात्मा शिव का आदेश बाबा ने सुनाया।

बाबा ने हर एक कन्या और माताओं को अपने पिता या पति से सम्मति-पत्र लाने को कहा-

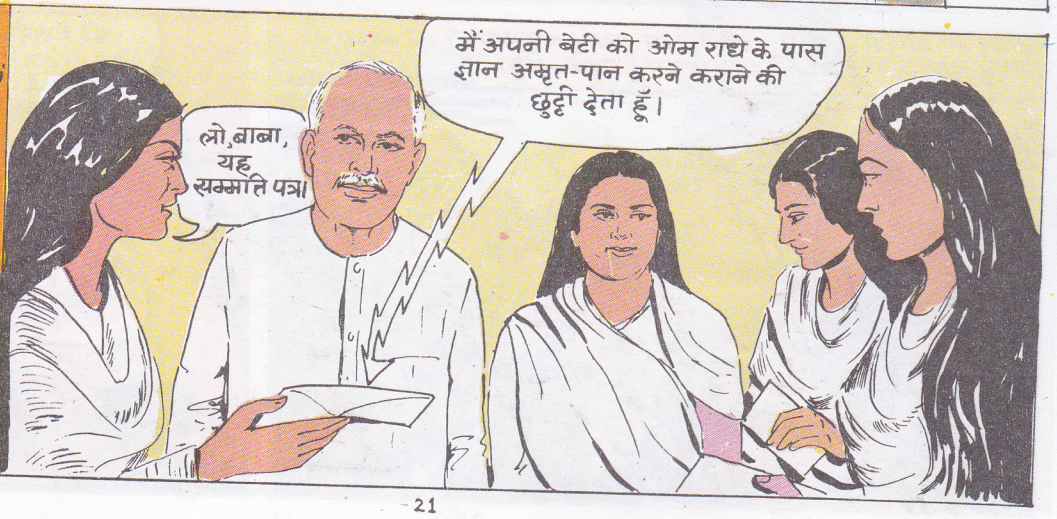

ब्रह्मचर्य के पालन की बात पर सिन्ध हैदराबाद में हलचल फैल गयी। कइयों के पिता, चाचा, भाई, पति आदि ॐ मंडली में जाने की मना करने लगे। कन्याओं - माताओं पर जुल्म होने लगे।

विरोधियों ने मिलकर ॐ मंडली को बंद कर देने की ठानी। पिकेटींग करके बच्चों को तीन घंटों तक रास्ते में रोका। बच्चों ने कुछ न खाया न पिया।

बाबा को मारने के लिए षड्यंत्र रचा गया। बंदूकधारी को बाबा की जगह चमकता हुआ सितारा दिखाई पड़ने लगा।

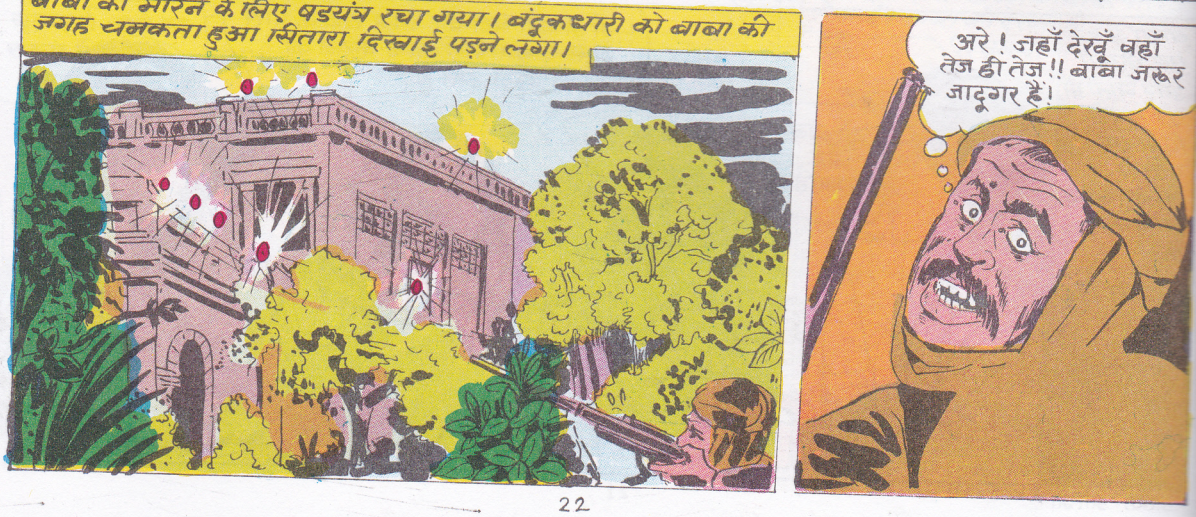

एक बार बाबा अपने मकान के कमरे में बैठे हुए थे.....

बाबा कोई सिख्भाई आपसे मिलने के लिए आया है। वह बड़ा भयानक लगता है।

कोई बात नहीं बेटी उसे ऊपर भेजो।

वाह गुरु वाह!! बाबा मैं आपको मारने के लिए आया था।

सदगुरु एक शिव बाबा है। तुम उनकी संतान आत्मा हो।

सतसंग भवन (लारवा भवन) में विरोधियों द्वारा आग बहनों द्वारा योग बल सहित प्रतिकार...।

जाको राखे साईयां मार सके ना कोई।

1938 में बाबा कराची चले गये। बाद में कन्याएँ-माताएँ और कई अपने परिवार सहित कराची पहुँच गये।

तुम्हें शिव-शक्ति बन कर जगत का उद्धार करना है। काम क्रोध आदि विकार ही सच्चे दुश्मन हैं।

अंतर्मुखी बनकर एक रस अवस्था प्राप्त कराने के लिए बाबा यज्ञ वत्सों को सागर के किनारे पर ले जाते। सुख शांति आनंद और प्रेम के सागर से सभी के मन के तार जुड़ जाते थे।

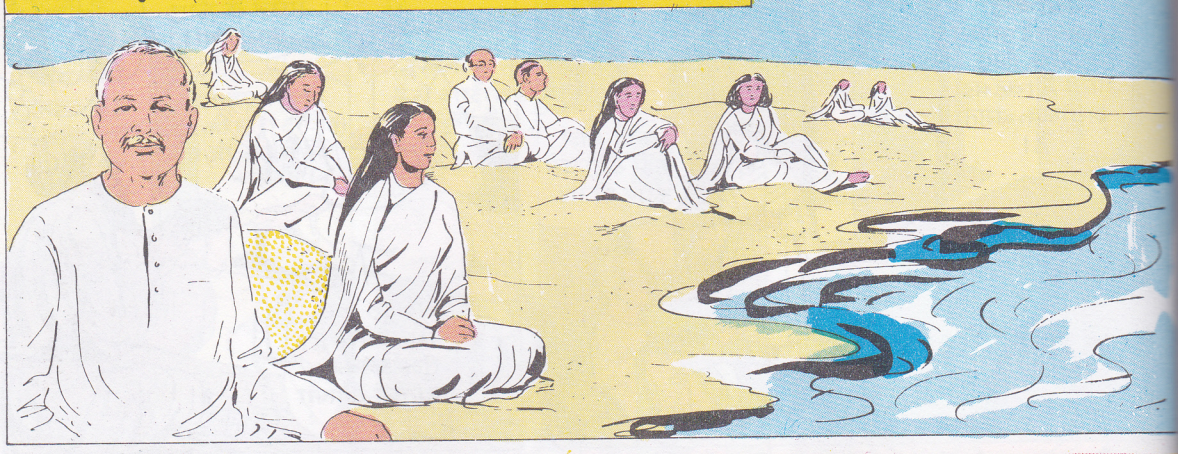

विरोधियों ने अपनी बहू-बेटियों का वापिस कब्जा लेने तथा ॐ मंडली पर प्रतिबंध-लाने के लिए कोर्ट में केस दाखिल कर दिया।

ॐ राधे (सरस्वती जगदम्बा) ने कोर्ट में निर्भय होकर झूठे आरोपों का पर्दाफाश किया —

सदेंश पात्रियां सूक्ष्मवतन में जातीं और ज्ञान के राज़ ले कर आतीं। इन पर बाबा और ॐ राधे क्लास कराते। ज्ञान के नित्य नवीन श्रृंगार से बच्चों को भरपूर करते। उनमें शोभा (गुल्जार) नामक कन्या ने ध्यान में जाकर ज्ञान के अनेक राज़ खुलते हुए दृश्य देखें।

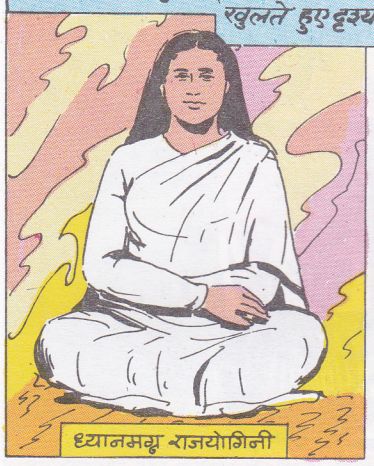

ध्यानमग्न राजयोगिनी

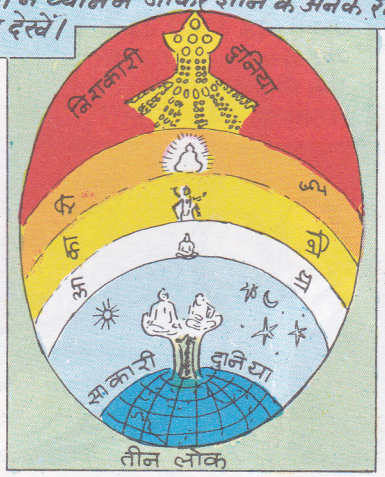

तीन लोक

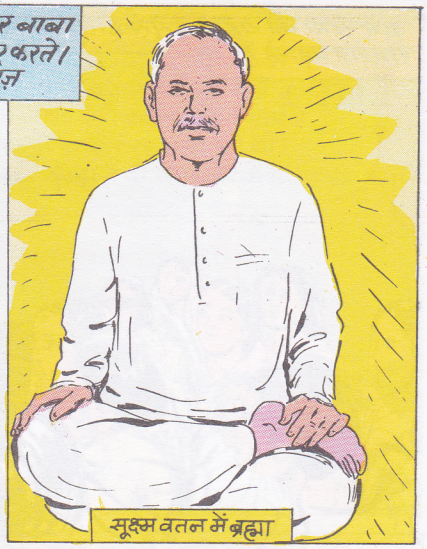

सूक्ष्म वतन में ब्रह्मा

आनेवाली सतयुगी नई दुनिया

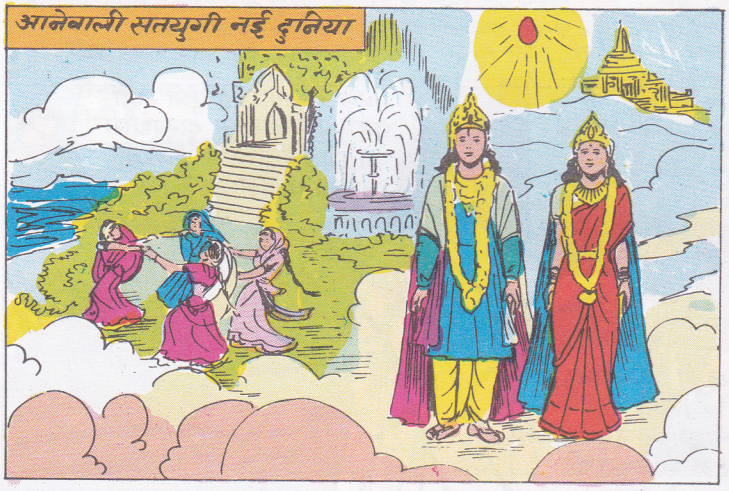

निराकारी आत्माओं की दुनिया परमधाम्।

धीरे धीरे इस रुद्र-ज्ञान-यज्ञ में कई भाई-बहन सपरिवार समर्पित जीवन का दिव्य अनुभव करने लगे। इनमें बाबा का लौकिक भतीजा विश्वकिशोर का परिवार और आनंद किशोर, विश्वरतन, चन्द्रहास आदि कई आते गये। यज्ञ वत्सों की संख्या करीब 350 की हो गयी।

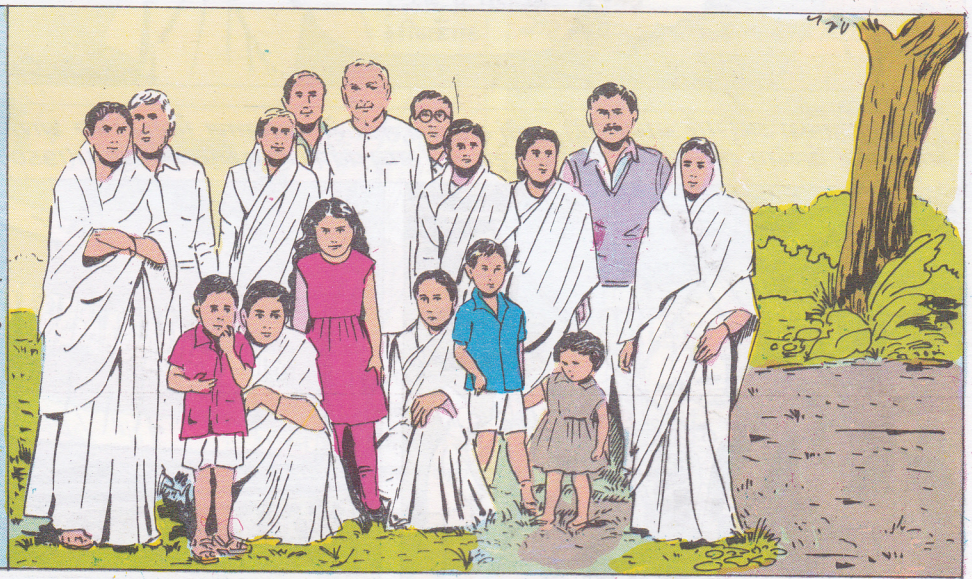

अब सभी को यही महसूस होता था कि ज्ञान के सागर परमपिता शिवपरमात्मा शिक्षक के रूप में हमें रोज रोज पढ़ा रहे हैं।

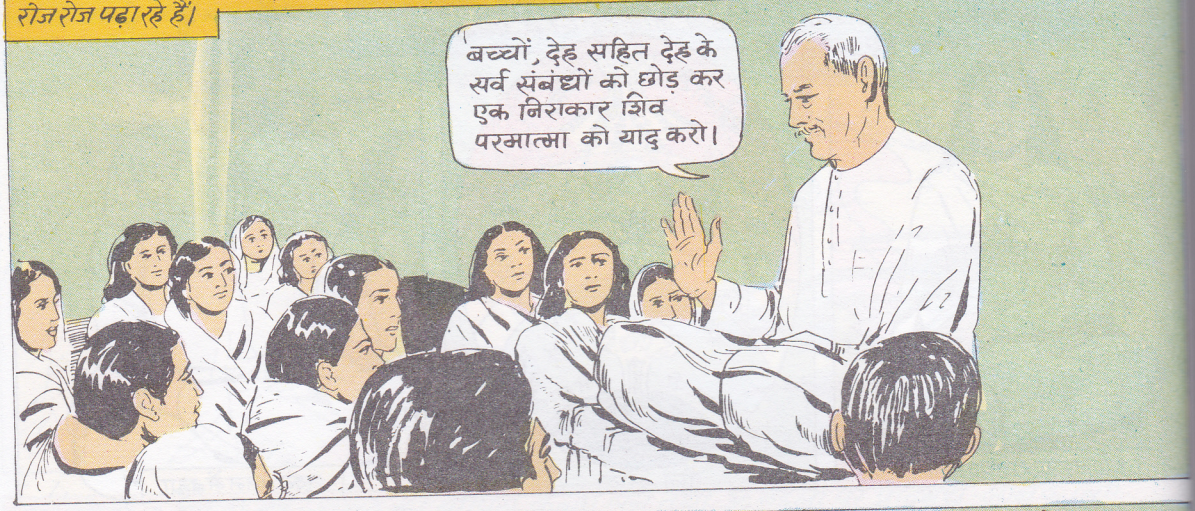

ईश्वरीय जीवन में मग्न कन्याओं को बाबा ने अपने घर वालों का भी कल्याण करने के लिए भेजा। ब्रह्माकुमारी मनोहर बहन को आंगन में देख उनकी माता की खुशी दिल का बांध तोड़ कर उमड़ पड़ी।

ईश्वरीय आदेश अनुसार बाबा यहाँ वत्सों सहित कराची से ससम्मान विदा हो कर भारत में ओरवा बन्दरगाह के लिए रवाना हुए। फिर वहाँ से ट्रेन द्वारा आबू पर्वत (राजस्थान) पर आये। (1950)

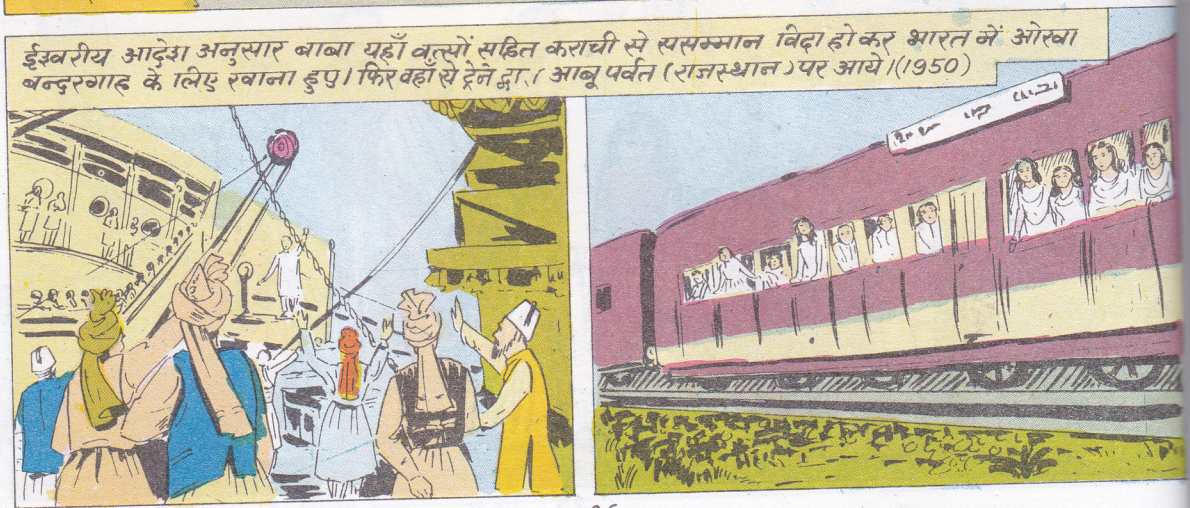

आबू पर्वत पर सारा यज्ञ-परिवार भरतपुर के राजा की ब्रज कोठी में आया।

बाबा, यहाँ तो साँप भी रहते हैं!

साँप हमारा क्या बिगाड़ेंगे? हमें तो साँपों से ही (काम, क्रोध अहंकार आदि) मुकाबला करना है।

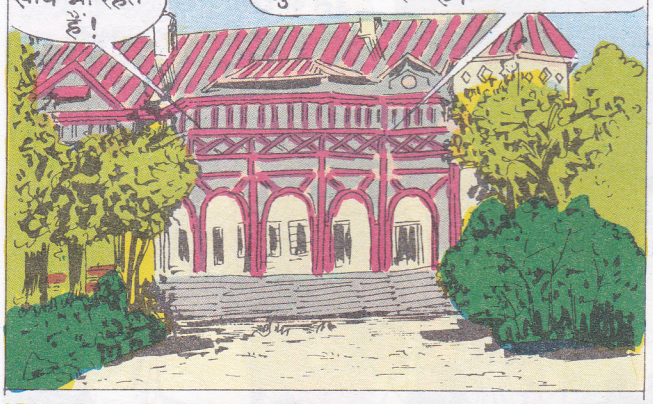

देलवाड़ा के सुप्रसिद्ध मंदिर में स्थित तपस्वीमूर्त मूर्तियों का राज समझाते हुए...

बच्चों, पांच हज़ार वर्ष पूर्व यहाँ आदिदेव ब्रह्मा तथा देवी सरस्वती ने अपने वत्सों सहित तपस्या की थी। यह तुम्हारी ही यादगार है।

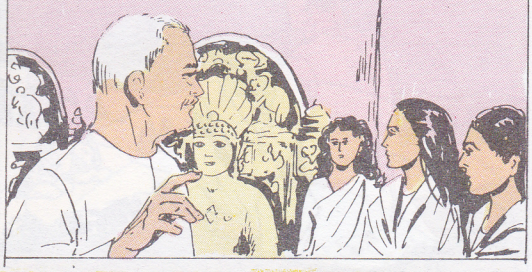

दूर पहाड़ों पर बाबा के साथ कतार में जाते हुए श्वेत वस्त्रधारी ब्रह्मा वत्सों को देख राहगीर स्तंभित रह जाते थे।

यह तो सचमुच हंसों की टोली है।

पहाड़ियों पर बाबा सबसे आगे रहते।

बच्चे, तुम्हीं सच्ची शिव-शक्तियाँ हो— राज-ऋषि हो। तुम्हें ज्ञान-तलवार से और योग-कवच से माया के साथ युद्ध करना है।

बाबा, आप इतने बूढ़े हो, फिर भी इतना कैसे दौड़ सकते हो?

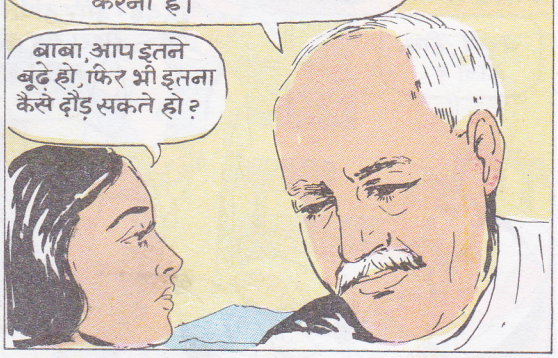

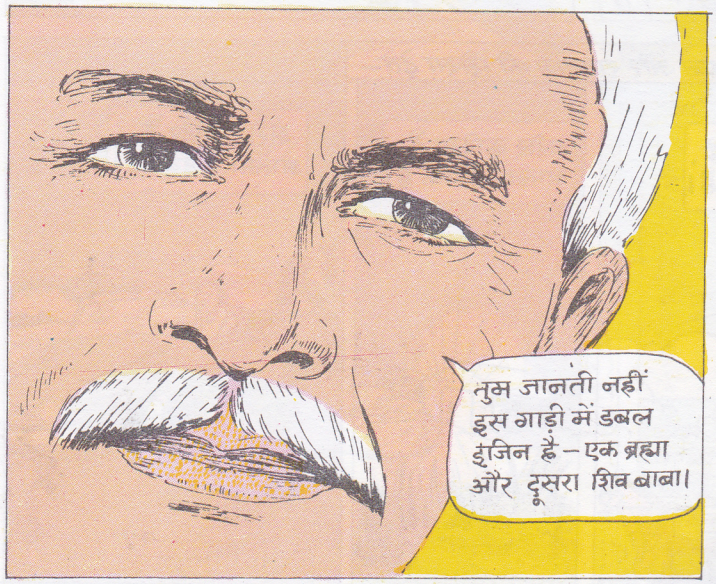

तुम जानती नहीं इस गाड़ी में डबल इंजिन है — एक ब्रह्मा और दूसरा शिव बाबा।

बाद में पांडवभवन सुरम्यालय बना।

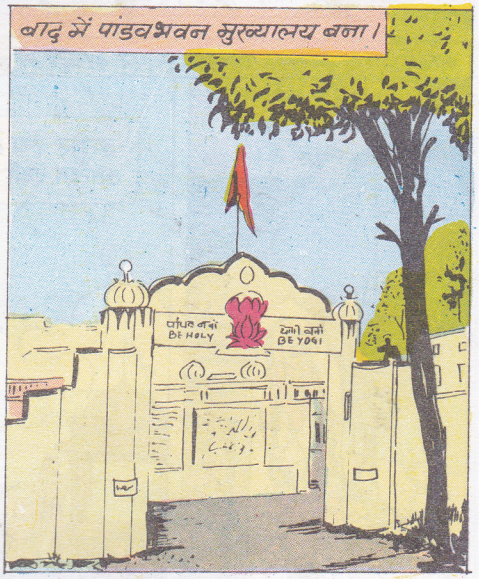

बाबा सब बच्चों को पहाड़ी पर खुले स्थान में ले जाते, अशरीरी योग अवस्था का अभ्यास कराते।

यहाँ शिव बाबा को याद है। सब अंतर्मुखी होकर पंछी की तरह उड़ो।

ब्रह्मा बाबा के द्वारा शिव परमात्मा पांच हजार वर्ष से बिछड़े हुए बच्चों को अति प्यार से मिलते और अपने हाथों से बच्चों को प्रेमसे टोली (प्रसाद) खिलाते।

इस जॉडली युनिवर्सिटी में तुम दैवी गुण धारण कर सतयुगी दुनिया में श्री लक्ष्मी नारायण जैसे देवी देवता बनोगे।

बम्बई की हॉस्पीटल में बाबा को एक बड़े ऑपरेशन के लिए दाखिल किया गया। अनेस्थेशिया सुंघाये बिना ही सर्जन को ऑपरेशन करने के लिए बाबा ने कहा –

बच्चे, ठीक हो न ?

अरे, इतना बड़ा दर्द! और हर्षित चेहरा यह कोई महान आत्मा है।

मम्मा (सरस्वती जगदम्बा) सभी यज्ञ वत्सों को पुरुषार्थ में आगे बढ़ातीं।

मम्मा, उसने मेरे लिए ऐसा बुरा वचन कहा –

तुम स्वमान की सीट पर बैठ-कर देखो कि "मुझमें फीलिंग क्यों है ? पहले अपनी अवस्था ठीक करो।

बाबा और मम्मा अत्यंत सरल शब्दों में ज्ञान और राजयोग की शिक्षा देते –

इस शरीर रूपी मंदिर में आत्मा चैतन्य मूर्ति है।

शरीर रथ है, आत्मा रथी है।

शरीर कुटिया है, आत्मा दीपक है।

शरीर मोटर है, आत्मा ड्राईवर है।

परमात्मा शिव को त्रिमूर्ति भी कहते हैं क्योंकि वे ब्रह्मा द्वारा नई सतयुगी सृष्टि की स्थापना, शंकर द्वारा पुरानी कलियुगी सृष्टि का विनाश और विष्णु द्वारा नई सतयुगी सृष्टि की पालना का कार्य कराते हैं।

शिव परमात्मा ने तीन लोक का राज ब्रह्मा मुख द्वारा बताया। साकारी पृथ्वीलोक, आकारीसूक्ष्म-लोक और निराकारी ब्रह्मलोक।

यह सृष्टि चक्र हर पाँच हजार वर्ष बाद हूबहू पुनरावर्तित होता रहता है — सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग- इन चारों युगों का एक कल्प होता है। कलियुग और सतयुग का संगमसमय अभी चल रहा है।

जैसे शरीर का पिता शरीर-धारी होता है, वैसे आत्मा के पिता परमआत्मा ज्योति बिन्दु स्वरूप हैं। आत्मा का निवास स्थान इस शरीर में के बीच में है।

योग अर्थात परमात्मा पिताकी निरंतर याद जिससे जीवन श्रेष्ठ बनता है।

राजयोग आत्मा का परमात्मा (पिता के साथ सुंदर और मधुर मिलन है। जिसके द्वारा आत्मा परमात्मा से सुख, शांति, पवित्रता, आनंद और प्रेम की अनुभूति करती है।

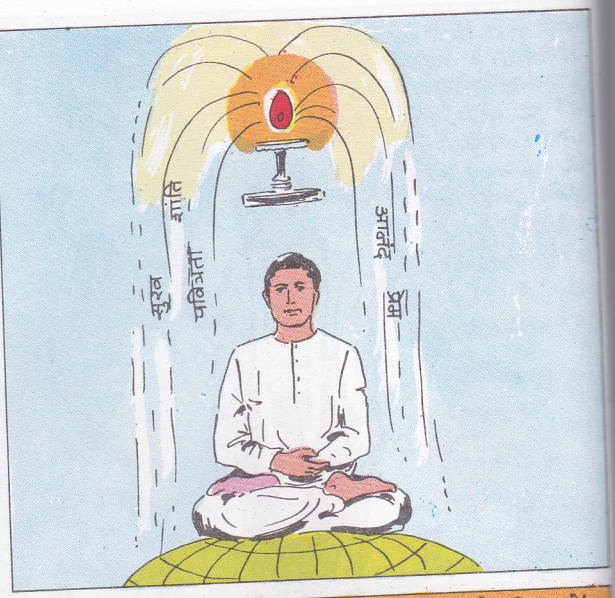

अब बाबा ने यज्ञ वत्सों को भारत के कोने कोने में जाकर प्यासी आत्माओं की प्यास ज्ञानामृत से बुझाने के लिए भेजा।

बच्चे अब तुम्हें विश्व की प्यासी आत्माओं को शांति और सुख का वरदान देना है। जाओ। घर घर जाकर बाबा का संदेश सुनाओ।

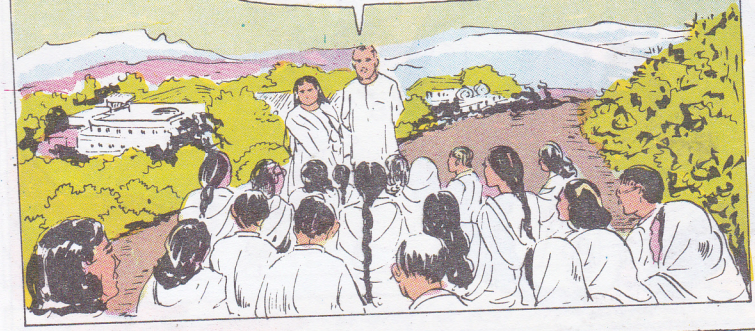

ब्रह्माकुमारी बहनें भारत भूमि की चारों दिशाओं में शिव बाबा का संदेश सुनाने पहुँच गयीं।

विश्व के अनेक देशों में जा कर यज्ञ वत्सों ने परमपिता शिव के अवतरण का मधुर संदेश सुना कर शांति-कुण्ड स्थापित किये।

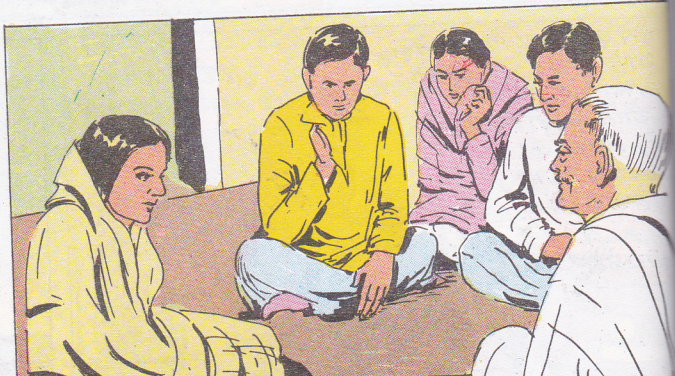

मधुवन आबूपर्वत (पाण्डव भवन) पर आकर कई मुलाकाती बाबा की मीठी वाणी सुनकर आत्मिक शांति का अनुभव करते। सेवा अर्थ बाबा कई बार बम्बई-देहली भी गये।

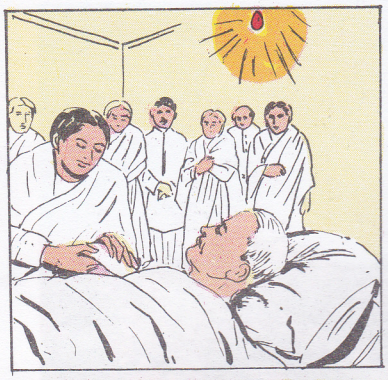

इस प्रकार अपने मन, वचन, कर्म से हर आत्मा में शान्ति और पावित्रता का बल भरते... ब्रह्मा बाबा संपूर्णता को प्राप्त कर 18 जनवरी 69 को अव्यक्त हो गये।

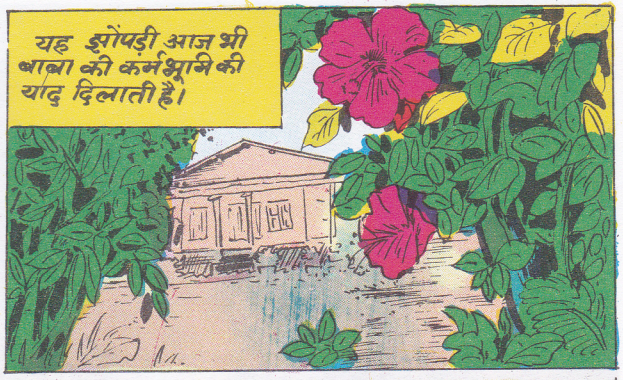

यह झोंपड़ी आज भी बाबा की कर्मभूमि की याद दिलाती है।

बाबा की स्मृति में मधुबन में बना हुआ शांति स्तंभ आज भी विश्व की आत्माओं को शांति और पावित्रता का ईश्वरीय संदेश दे रहा है।

* प्यारे बच्चों, मुक्ति और जीवन मुक्ति आपका ईश्वरीय जन्म सिद्ध अधिकार है।
* कभी भी किसी को मन वचन और कर्मसे दुःख न दो।

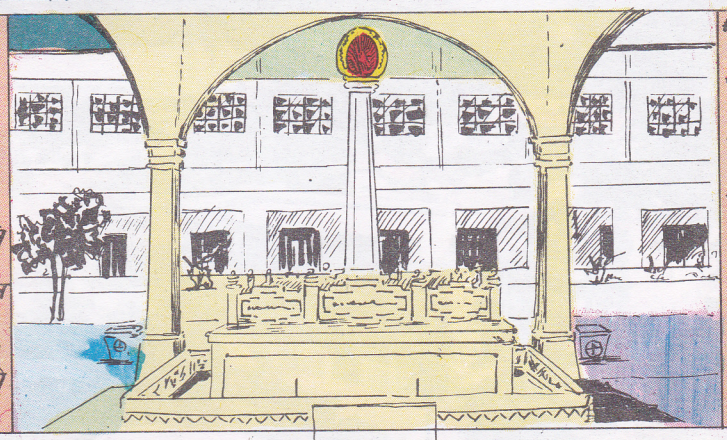

*बेहद के बाप और वरसे को याद करो।
* दिव्य गुण धारण करो।
* अविनाशी ज्ञान धन दान करो।
* ज्ञानस्वरूप, प्रेम-स्वरूप, शांतिस्वरूप, पावित्रता स्वरूप, और आनंदस्वरूप बनो।

आइये आप सभी बच्चे भी अपने वर्तमान तथा भविष्य जीवन को श्रेष्ठ बनाइये। आनेवाली सतयुगी दुनिया में सच्चे स्वराज्य का अधिकार प्राप्त कीजिए। "अब नहीं तो कब नहीं।"

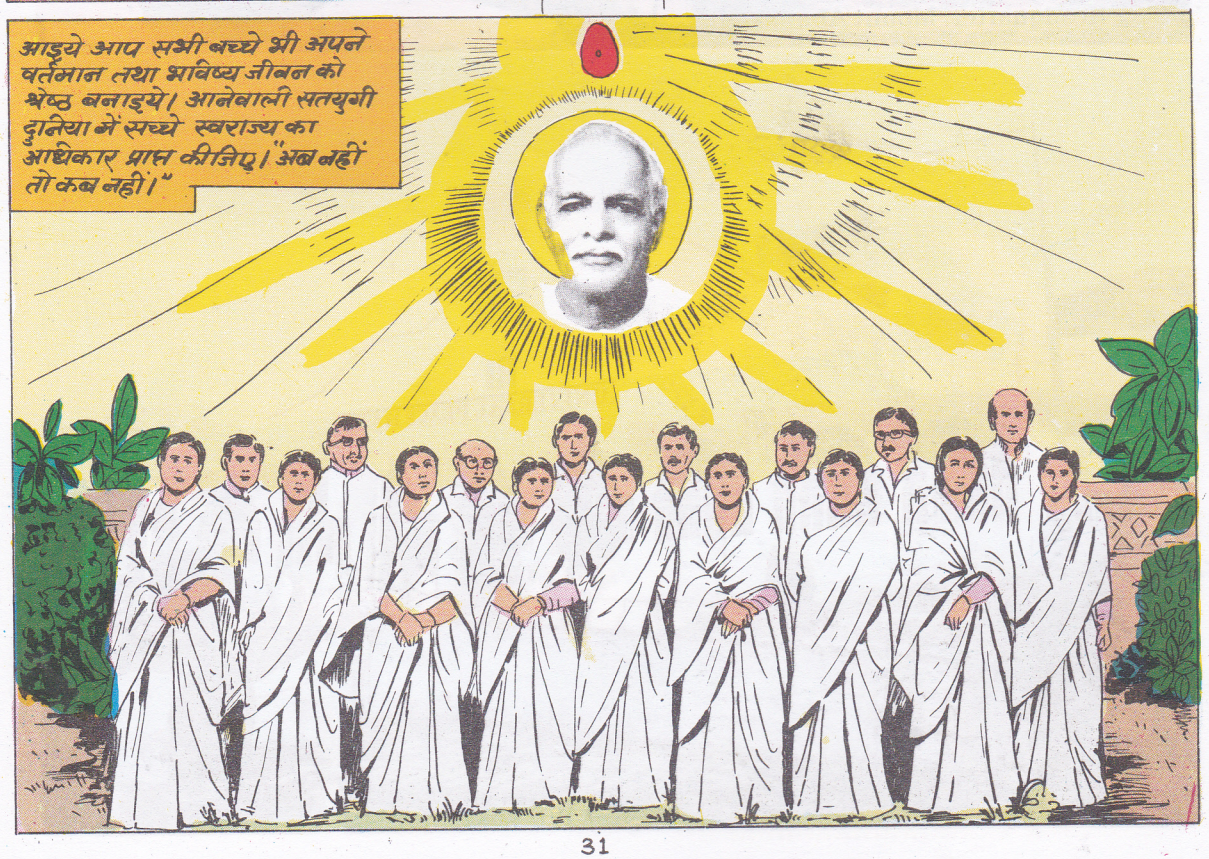

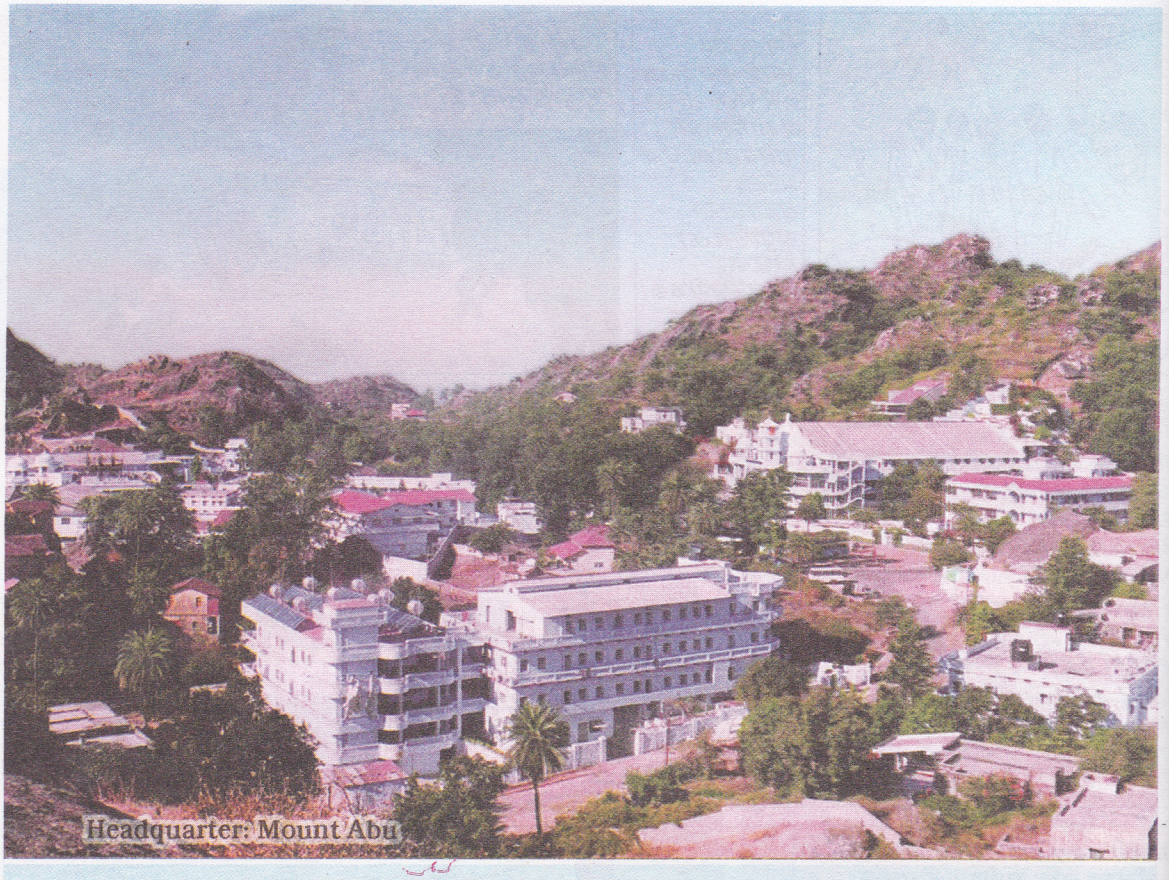

Headquarter: Mount Abu

विश्व नवनिर्माण आध्यात्मिक संग्रहालय, आबू पर्वत में राजसिंहासन पर विराजमान
विश्व महाराणी श्री लक्ष्मी एवं विश्व महाराजन श्री नारायण की मूर्तियाँ।